SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पर सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव

कमलेश कुमारी, राजनीति शास्त्र विभाग
जितेश कुमार, इतिहास विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कमलेश कुमारी
जितेश कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 02/11/2023
Plagiarism : 03% on 26/10/2023

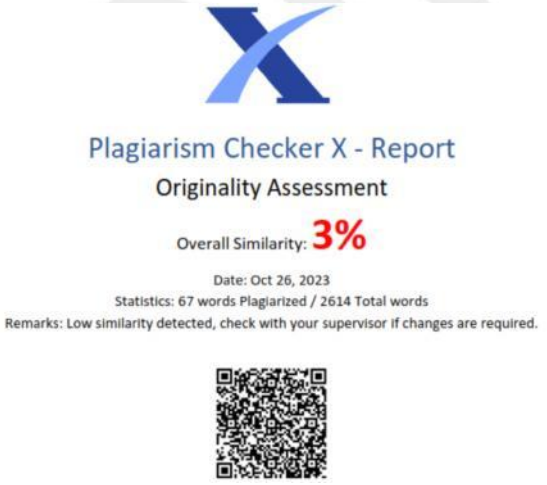

शोध सार

लगभग आधी आबादी होने के बावजूद राजनीति में भागीदारी की दर अविश्वसनीय रूप से कम है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में कमी ही रही। हाल के अध्ययन बताते है कि आज़ादी के बाद संसद में पहली बार महिलाओं की भागीदारी 14.4 प्रतिशत सर्वाधिक है (इंटर पार्लियामेंट यूनियन)। लेकिन काफ़ी ऐसे कारक हैं जो महिलाओं की भागीदारी को सीमित करते है जैसे जाति, धर्म ,लिंग, पितृसत्तात्मक प्रवृत्ति आदि कारण हैं। कई बार महिलाओं के द्वारा भी कम रूचि दिखाई जाती है इसलिए, पुरुषों की पुनर्शिक्षा और समाज में लैंगिक भूमिका की रूढ़िवादिता के मुद्दों पर ध्यान देना जरूरी है। इससे समाज में सामाजिक समानता और सामाजिक बदलाव हो सकता हैं। प्राचीन इतिहास से लेकर वर्तमान तक सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का महिलाओं के जीवन और समाज में उनकी भूमिकाओं पर निरंतर प्रभाव पड़ा है। सांस्कृतिक मानदंड और परंपराएँ अक्सर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को परिभाषित करती हैं, जो महिलाओं के अवसरों और जिम्मेदारियों को सीमित कर सकती हैं। ये भूमिकाएँ देखभाल, घरेलू काम–काज और करियर विकल्पों से जुड़ी अपेक्षाओं की निर्धारित कर सकती हैं। कुछ संस्कृतियों में, लड़कियों और लड़कों के लिए शैक्षिक अवसरों में असमानताएँ हो सकती हैं। इससे महिलाओं की ज्ञान और आर्थिक अवसरों तक पहुंच सीमित हो सकती है। सामाजिक और सांस्कृतिक कारक महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों में असमानता पैदा कर सकते हैं। कुछ समाजों में, महिलाओं की नौकरी बाजार तक पहुंच सीमित हो सकती है या उन्हें वेतन अंतर का सामना करना पड़ सकता है। सांस्कृतिक कारक राजनीति और नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी को

प्रभावित कर सकते हैं। कुछ समाजों में, महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। (Pamela Paaton and Melanie M-Huges)।

मुख्य शब्द

राजनीति, इतिहास ,महिला, राजनीतिक भागीदारी, सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य.

परिचय

एक लोकतांत्रिक समाज में, पुरुषों और महिलाओं के बीच समान राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करना व्यवस्था की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। समाज के प्रत्येक वयस्क सदस्य को इसका अंतर्निहित अधिकार होना चाहिए। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का लाभ नहीं मिलना चाहिए। (लेम्स, श्लोज़मैन ए वेरबा, 2001)

प्राचीन भारतीय इतिहास में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण थी। वैदिक काल से लेकर मौर्य, गुप्त, चोल, विजयनगर और मुगल साम्राज्यों में महिलाएं राजनीतिक और सामाजिक जीवन में अहम भूमिका निभाती थीं (A.S Altekar)। राजमाता हेलेना चंद्रगुप्त मौर्य की पत्नी हेलेना, जिन्होंने बौद्ध धर्म को प्रचारित किया था। छत्रपति शिवाजी की मां जीजाबाई ने मराठा साम्राज्य की संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजमाता जीनाहा, मुगल साम्राज्य के शासक अकबर की नवरत्न थीं और उनके दरबार में विद्वत्ता के साथ सामर्थ्य दिखाई दी। 13वीं सदी की शासक रजिया सुलतान, दिल्ली सल्तनत की पहली महिला सुल्तान थी। चितौड़ की रानी पद्मिनी, जो अलाउद्दीन ख़लिज़ा के हमले से अपने पति राणा रतनसिंह के लिए लड़ी।

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण है और वे समाज, राजनीति और सरकार में अपनी भूमिका निभा रही हैं। महिला अधिकारों के पक्ष में विभागीय संगठन, महिला प्रतिनिधित्व, और महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं और कानून बनाए गए हैं। महिलाएं विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में भाग लेती हैं और निर्वाचनों में उम्मीदवार भी बनती हैं। उनमें से कई महिला नेताओं ने महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर पहुंचकर देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और सशक्तिकरण के लिए और भी कई कदम उठाए जा रहे हैं, ताकि समाज में समानता और समरसता की दिशा में क़दम बढ़ा सके (मालविका राव द्वारा ''राजनीति में भारतीय महिलाएं'')

राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र के लिए आवश्यक है, यह एक प्रकार की मूल आवश्यकता है। लोकतंत्र में व्यक्तिगत सामर्थ्य विकसित करने के लिए पुरुषों और महिलाओं को समान अवसर देने के एक प्रतिबद्धता को शामिल करता है। इसमें यह शामिल होता है कि जीवन को लेने वाले निर्णयों में भाग लिया जाए। भागीदारी उन आयोजनों को शामिल करती है जैसे कि सार्वजनिक और पार्टी कार्यालय को निभाना, चुनाव के लिए उम्मीदवार बनना, चुनाव प्रचार में भाग लेना, मतदान करना, और राजनीतिक प्रोत्साहन के प्रति खुद को प्रकट करना (Milbrath,1965)।

महिलाएँ और राजनीतिक भागीदारी

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को संदर्भित करती है, जिसमें मतदान में उनकी भागीदारी, राजनीतिक कार्यालय के लिए दौड़ना, निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करना और राजनीतिक सक्रियता और वकालत में शामिल होना शामिल है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करना एक अच्छी तरह से कार्यशील लोकतंत्र और न्यायपूर्ण समाज के लिए महत्वपूर्ण है। यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है और उन मुद्दों और नीतियों को संबोधित करने में मदद करता है जो महिलाओं के लिए विशेष महत्व रखते हैं। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के प्रयासों में अक्सर सरकार और राजनीतिक निर्णय लेने वाले निकायों में उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उपाय शामिल होते हैं, साथ ही महिलाओं को वोट देने के लिए प्रोत्साहित करने, महिला उम्मीदवारों का समर्थन करने और राजनीतिक प्रवचन और सक्रियता में सक्रिय रूप से शामिल होने की पहल भी शामिल होती है। इन प्रयासों का उद्देश्य लैंगिक बाधाओं को तोड़ना और अधिक

समावेशी और न्यायसंगत राजनीतिक परिदृश्य बनाना है (राखी भट्टाचार्य द्वारा 'भारत में महिलाएं और राजनीति')।

दुनिया भर में राजनीतिक भागीदारी में महिलाओं की बहुत धीमी प्रगति के लिए कई कारण हैं, जिनमें उनके घरेलू दायित्वों के कारण राजनीति के लिए समय, समाजीकरण,कमजोर संपत्ति आदि की कमियां शामिल हैं। स्कूलों और बाजार में भेदभाव के कारण पुरुषों की तुलना में आधार, राजनीतिक करियर को बढ़ावा देने वाली नौकरियों में उनका कम प्रतिनिधित्व, पुरुष–प्रधान पार्टियों के भीतर उनका हाशिए पर होना, कुछ प्रकार की चुनावी प्रणालियों में पुरुष और मौजूदा पूर्वाग्रह को दूर करने में उनकी असमर्थता। (नियम, 1981 केली, 2019)

दुनिया भर में स्थानीय सरकारों और अन्य उप–राष्ट्रीय निर्वाचित निकायों में महिलाएँ हैं, और उप–राष्ट्रीय समुदायों और सार्वजनिक निकायों के लिए शासन प्रणालियों में इतनी व्यापक भिन्नता है कि उनकी तुलना करना मुश्किल है।

महिलाओं को सामान्यतः कमज़ोर और स्मार्ट निर्णय लेने में असमर्थ के रूप में देखा जाता है, उन्हें केवल गपशप में लगे रहने और कहते सुनने में सक्षम, पूरी तरह से अक्षम और कम बुद्धिमान के रूप में चित्रित किया गया है। इसे वर्षों से पुरुष प्रधान संस्थानों और पितृसत्तात्मक समाजों के माध्यम से पेश और मजबूत किया गया, जिससे यह विचार घर कर गया कि महिलाएं हर पहलू में कमतर हैं, महिलाओं के लिए राजनीति में प्रवेश करना कठिन हो गया, महिलाओं के प्रति ऐसा रवैया आज भी दुनिया भर के समाजों में मौजूद है।

'अक्सर पुरुषों को आर्थिक पालक माना जाता है, जो अपने घर के बाहर परिवार का प्रतिष्ठान प्रतिष्ठानित करने का अधिकार रखते हैं, जबकि महिलाएं पारंपरिक घरेलू कार्यों का प्रभार रखती हैं (Kelly, 2019)। महिलाओं की समाज में स्थिति और सशक्तिकरण को नकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा बाधित किया जाता है, जो उनके जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव डालता है, ऐसा माना जाता है कि महिलाएं नेता बनाई जाती हैं, लेकिन नेता बनायी जाती हैं। महिलाओं के नेतृत्व क्षमता के बारे में सामाजिक धारणा, भागीदारी में बाधा डालती है, और लैंगिक समानता के प्रति पारंपरिक दृष्टिकोण महिलाओं की सामाजिक सहयोग में प्रगति को प्रभावित करते हैं। (Kelly, 2019, पृष्ठ 1)'

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की यात्रा

आज़ादी से पहले भारत में पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाओं और मानसिकता के कारण महिलाओं के हाशिए पर रहने और शोषण का इतिहास रहा है। बंगाल में स्वदेशी से शुरू हुए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन (1905–08) में महिलाओं की प्रभावशाली भागीदारी भी देखी गई, जिन्होंने राजनीतिक प्रदर्शन आयोजित किए और संसाधन जुटाए, साथ ही उनमें नेतृत्व की स्थिति भी संभाली। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, इसके संविधान ने सभी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के लिए समान स्थिति की गारंटी दी। संविधान का भाग III पुरुषों और महिलाओं के मौलिक अधिकारों की गारंटी देता है। राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान काम के लिए समान वेतन, काम की स्थितियाँ और मातृत्व राहत प्रदान करके आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करते हैं। 1992 में, संविधान में 73 वें और 74 वें संशोधन में पंचायती राज संस्थानों (पीआरआई) और नगर निकायों में महिलाओं के लिए सीटों की कुल संख्या में से एक–तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया गया (वी बी सिंह द्वारा 'राजनीति में भारतीय महिलाएं')। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022 के अनुसार राजनितिक सशक्तिकरण आयाम में भारत की रैंक 146 में से 48वें स्थान पर है।

भारत में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का आकलन करने के तीन मुख्य मानदंड

मतदाता के रूप में महिलाऐं: 2019 के पिछले लोकसभा चुनाव में, लगभग उतनी ही महिलाओं ने पुरुषों के बराबर मतदान किया, जो राजनीति में लैंगिक समानता की दिशा में भारत की प्रगति में एक महत्वपूर्ण योगदान है, जिसे 'आत्म– सशक्तीकरण की मूक क्रांति' कहा गया है। विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद से बढ़ी हुई भागीदारी कई कारकों के कारण जिम्मेदार है।

उम्मीदवार के रूप में महिलाएँ: हालाँकि, कुल मिलाकर, समय के साथ संसदीय चुनावों में महिला

उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन पुरुष उम्मीदवारों की तुलना में उनका अनुपात अभी भी कम है। 2019 के लोकसभा चुनाव में मैदान में उतरे कुल 8,049 उम्मीदवारों में से 9 प्रतिशत से भी कम महिलाएं थीं।

संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्वः हालाँकि चुनावों में मतदाताओं के रूप में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लोकसभा और राज्यसभा दोनों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के आंकड़ों से पता चलता है कि महिला प्रतिनिधियों का अनुपात उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में कम रहा है।

सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य और महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

सांस्कृतिक मूल्य और श्रम विभाजन अभी भी स्पष्ट रूप से लिंग आधारित हैं। सामाजिक मानदंड वह ईसाई समूह महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के विरोध में हैं। मुस्लिमों को पारंपरिक रूप से कुछ सरल कार्यों में संलग्न होने से प्रतिबंधित किया जाता है, जिसमें किसी महिला द्वारा राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखने का मात्र उल्लेख करना अपवित्रता के रूप में देखा जा सकता है। समाज में प्रचलित धर्मों की यह शिक्षा महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भाग लेने से रोकती है। (ओरजी एट अल, 2018)

सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों की राजनीतिक भागीदारी की कमी में भूमिका

पितसत्तात्मक मानसिकताः भारत एक अत्यंत पितृसत्तात्मक समाज है, और महिलाओं को अपार पुरुषों से कमतर माना जाता है। यह मानसिकता समाज में गहराई से व्याप्त है और लोगों द्वारा महिलाओं की नेतृत्त करने और राजनीति में भाग लेने की क्षमताओं को समझाने के तरीके को प्रभावित करती है। (मिकी कॉल और लेस्ली द्वारा 'लिंग एवं राजनीतिक भागीदारी')

सामाजिक मानदंड और रूढ़ियों' भारत में महिलाओं से अवसर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के अनुरूप रहने की अपेक्षा की जाती है. और उन्हें राजनीति में करियर बनाने से हतोत्साहित किया जाता है। सामाजिक मानदंड और रूढ़िया करती हैं कि महिलाओं को पत्नी और माँ के रूप में अपनी भूमिकाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए, और राजनीति को अक्सर पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है। (पामेला और हॉक्सवर्थ द्वारा 'महिलाएं राजनीति और शक्ति एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य')

शिक्षा तक पहुंच का अभावः भारत में महिलाओं की ऐतिहासिक रूप से शिक्षा तक पहुंच सीमित रही है, जिससे राजनीति में भाग लेने की उनकी क्षमता में बाधा आई है। हालांकि हाल के वर्षों में सुधार हुए हैं, फिर भी कई महिलाओं में अभी भी राजनीतिक पद के लिए आवश्यक शिक्षा और कौशल का अभाव है। वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) 2020 के अनुसार, 6–10 वर्ष की आयु के बीच के 55 प्रतिशत बच्चों का स्कूल में नामांकन नहीं था, और 11–14 वर्ष की आयु के बीच के 15.9 प्रतिशत बच्चों का स्कूल में नामांकन नहीं था।

राजनीतिक दलों में सीमित प्रतिनिधित्व

महिलाओं को अक्सर राजनीतिक दलों में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है, जिससे उनके लिए आगे बढ़ना और चुनावों के लिए पार्टी नामांकन सुरक्षित करना मुश्किल हो जाता है। प्रतिनिधित्व की इस कमी को राजनीतिक दलों के भीतर लैंगिक पूर्वाग्रह और इस धारणा के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि महिलाएं पुरुषों की तरह चुनाव योग्य नहीं हैं।

हिंसा और उत्पीड़न

राजनीति में महिलाओं को अक्सर शारीरिक और ऑनलाइन दोनों तरह से हिंसा और उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है, जो उन्हें राजनीति में प्रवेश करने या मुद्दों पर बोलने से रोक सकता है। राजनीति में सुरक्षित और समावेशी स्थानों की कमी महिलाओं की भागीदारी में एक महत्त्वपूर्ण बाधा है।

असमान अवसर

राजनीति में महिलाओं को अवमार असमान अवसरों का सामना करना पड़ता है, जैसे कम वेतन, संसाधनों तक कम पहुंच और सीमित नेटवर्किंग अवसर यह असमानता महिलाओं के लिए पुरुष उम्मीदवारों के साथ प्रतिस्पर्धा करना और राजनीति में सफल होना चुनौतीपूर्ण होता है।

सिफारिशें

राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक विधायी निकायों में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित करना है। इसे बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल जैसे कुछ राज्यों में लागू किया गया है, जहां स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए कुछ प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। राजनीतिक दलों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि चुनावों के लिए उम्मीदवारों के चयन में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जाए।

उन्हें महिला उम्मीदवारों की भर्ती करने और जीतने योग्य सीटों पर उन्हें प्राथमिकता देने का प्रयास करना चाहिए। महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए सशक्त बनाने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। इससे महिलाओं को अपना आत्मविश्वास और कौशल विकसित करने और राजनीति की जटिलताओं को समझने में मदद मिलेगी। स्थानीय महिला नेताओं को प्रोत्साहित और समर्थन देकर राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाया जा सकता है। इसे परामर्श कार्यक्रमों और अन्य सहायता पहलों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है (सिंह, शालिनी, और सुप्रिया पंडित श्राजनीति में भारतीय महिलाएँ उनकी भागीदारी को मजबूत करने के लिए सिफारिशें अंतर्राष्ट्रीय महिला अध्ययन)

निष्कर्ष

सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथा और शिक्षा के अभाव ने महिलाओं की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी कम हो गई है। भारत में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी ने पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। हालांकि उल्लेखनीय महिला राजनीतिक नेता रही हैं। निर्वाचित पदों पर महिलाओं का समग्र प्रतिनिधित्व उनकी जनसांख्यिकीय हिस्सेदारी से कम है। स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण जैसे प्रयासों से जमीनी स्तर पर उनकी भागीदारी में सुधार हुआ है। हालाँकि, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व बढ़ाने की आवश्यकता है। लैंगिक पूर्वाग्रह, सामाजिक मानदंड और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बाधाएँ बनी हुई हैं। भारतीय राजनीति में लैंगिक समानता हासिल करना एक सतत प्रक्रिया है जिसके लिए अधिक समावेशी और न्यायसंगत राजनीतिक परिदृश्य बनाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

सरकार को महिलाओं के राजनीतिक हाशिए पर होने और असमानता के खिलाफ सकारात्मक कार्रवाइयों को संस्थागत बनाकर महिलाओं को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। अपनी नीतियों के माध्यम से राजनीतिक दलों को अपने संविधानों और घोषणापत्रों में कोटा प्रणाली स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो राजनीतिक संरचनाओं के सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए कुछ प्रतिशत राजनीतिक पदों को आरक्षित करता है, सभी पर अंकुश लगाता है। स्वतंत्र और निष्पक्ष विश्वसनीय चुनावों के लिए जगह देने के लिए राजनीति से जुड़े गुंडागर्दी और हिंसा के कृत्य, जो राजनीति में महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. बैरेट, एम., (1975), *महिला उत्पीड़न आज,* न्यूयॉर्क, शॉकेन बुक्स, पृष्ठ 3।
2. राय कल्पना, (1999) *वुमेन इन इंडिया पालिटेम्स,* रजत पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. सिंह, शालिनी, और सुप्रिया पंडित श्राजनीति में भारतीय महिलाएँ उनकी भागीदारी को मजबूत करने के लिए सिफारिशें, *अंतर्राष्ट्रीय महिला अध्ययन जर्नल,* वॉल्यूम 18, क्रमांक 3, 237– 248, 2017.

4. सेठ संजय, (सं.). *वैश्वीकरण और भारत में पहचान की राजनीति,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. जेनकिंस रोब, (1999) *भारत में लोकतांत्रिक राजनीति और आर्थिक सुधार,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. बसु अमृता, (2010) *वैश्विक युग में महिला आंदोलनः स्थानीय नारीवाद की शक्ति,* वेस्टव्यू प्रेस।
7. सेन रुक्मिणी, (2010) *भारत में महिलाएँ और राजनीति,* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. Sood Sushma, (1990) *Violance againest women,* Arihant Publishers, Jaipur.
9. ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट का अध्ययन।
10. अंतर्राष्ट्रीय महिला अध्ययन।

****